

कमलेश्वर के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना

Jaswinder Singh^{1*} Dr. Praveen Kumar²

¹ Research Scholar, PhD (Hindi), OPJS University, Churu, Rajasthan

² Research Director, Hindi Department, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् जनसामान्य को विश्वास था कि देश का हर क्षेत्र में तीव्र गति से विकास होगा। परन्तु विभाजन की भीषण घटना ने व्यक्ति को इतना कमजोर बना दिया कि उसका घर-बार उड़ गया, वह शरणार्थी बन गया और दुबारा बसने के लिए उसे विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ा। स्वतन्त्रता के पश्चात् मिश्रित अर्थ प्रणाली और राष्ट्रीय स्तर पर हुये नियोजन से समाज के आर्थिक जीवन में जबरदस्त परिवर्तन हुआ। सामाजिक व्यवहार, सामाजिक आदान-प्रदान और सम्बन्धों की अपेक्षाओं में भी बदलाव आया। इस परिवर्तन में आर्थिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। अर्थ के सन्दर्भ में वर्ग संघर्ष और द्वन्द्व ने सामाजिक जीवन में तनाव और बिखराव पैदा किया। संघर्ष और द्वन्द्व के दो छोर कहीं व्यवस्था और व्यक्ति, कहीं समाज और कहीं व्यक्ति और व्यक्ति होते हैं। जीवन में परिवर्तन के आर्थिक तत्व ने पारम्परिक जीवन मूल्यों को भी चुनौती दी, अतः पारिवारिक सामाजिक सम्बन्धों में द्वन्द्व उभरा और सम्बन्धों की स्थापित नैतिकता का विघटन आरम्भ हुआ। स्वतन्त्रता के पश्चात् गरीब और गरीब तथा अमीर और अमीर बनता गया।

-----X-----

विभाजन के कारण लम्बे समय के संस्कारों से निर्मित आन्तरिक 'व्यक्ति' भीतर से बेहद टूट गया। उसके विश्वासों का ध्वंस हुआ। इस प्रकार एक ओर स्वतन्त्रता के तुरन्त बाद खुशी की जगह व्यक्ति के भीतर निराशा, हताशा और उदासीनता का अन्धकार छा गया, तो दूसरी ओर इसी के साथ एक और मोह भंग जुड़ गया। स्वतन्त्रता की लड़ाई के दिनों के हमारे सत्यवादी, त्यागी, जनसेवी नेता स्वतन्त्रता के पश्चात् क्रूर, स्वार्थी और अत्याचारी व्यक्तियों में बदल गये। स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में सामाजिक क्रान्ति और नयी उद्भावना की सम्भावना थी। अत्याचारी, स्वार्थी एवं आर्थिक शोषण करने वाले शासकों से मुक्त होकर लोकतंत्र में राहत की सांस लेने की आशा थी। परन्तु ये सारी आशायें और विश्वास शीघ्र ही खण्डित हो गये, क्योंकि स्वतन्त्रता के पश्चात् भी व्यक्ति के आर्थिक शोषण की स्थिति में उल्लेखनीय परिवर्तन नहीं हो सका। नयी शासन व्यवस्था में नये ढंग के शोषक उत्पन्न हो गये। राजनीतिक नेता, ठेकेदार, सरकारी अफसर, बड़े किसान, क्षेत्रीय नेता, गांवों और तहसीलों के तहसीलदार, बी.डी.ओ. सरपंच और व्यापारी वर्ग आदि। राष्ट्रीय शक्ति को अपनी मुठ्ठी में केन्द्रित कर ये लोग अपने अनुकूल नियम बनाकर, शासन की व्यवस्था चलाने लगे। इससे जनता का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। उत्पादन और आर्थिक स्रोतों पर इन्हीं लोगों का अधिकार रहा।

समता प्रजातान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था में स्वतन्त्रता के लक्षण की पहली शर्त होती है। किन्तु समता का तात्पर्य मात्र अवसर की समता नहीं राष्ट्रीय सम्पदा के वितरण की समता से है। किन्तु हमारे यहां उत्पादन का बहुत बड़ा भाग समाज के एक विशेष वर्ग ने दबोच लिया। म्युनिसिपैलिटियों, चुंगियों, जिला परिषदों आदि में जनसेवा के लिए जिन पदों का निर्माण किया गया था, वे पद आर्थिक आय का सशक्त माध्यम बन गये। परिणाम स्वरूप इन्हें प्राप्त करने की होड़ लग गई। बोलियां बोली गईं। महंगे दामों पर वे खरीदे जाने लगे और उनमें जो कार्य हुये वे जनहित के विरोधी थे।

इस प्रकार स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में आर्थिक संस्कृति का एक भी उद्भावना चिह्न दिखाई नहीं दिया। कमलेश्वर के शब्दों में-और इस परिदृश्य तथा परिवेश से उपजी है आज की मानसिकता। 45 करोड़ की आबादी में 44 करोड़ अभिशप्त है और एक करोड़ मदमस्त। इस दारुण विघटन की स्थिति में हमारी नयी संस्कृति जन्म ले रही है।[1] स्वतन्त्रता के पश्चात् देश में होने वाली छीना झपटी को देख कर व्यक्ति अवसन्न रह गया। जब किसी के प्रति भी उसका विश्वास टूटा उसने अपनी ही शक्ति का सहारा लिया। किन्तु जब अपनी शक्ति के साथ व्यवहारिक स्तर पर अपने कार्य क्षेत्र की ओर बढ़ा तब इससे भी अधिक भयंकर स्थिति का सामना उसे करना पड़ा।

यह भयंकर स्थिति भी अवसंगति की। अपनी प्रतिभा और शक्ति को सक्रिय बनाने वाला कोई कार्य क्षेत्र उसे नहीं मिल पाया। कोई ऐसी जगह नहीं मिली उसे जिसे वह अपनी उचित जगह समझ सके। कोई भी व्यक्ति अपनी वर्तमान स्थिति और स्थान के लिए सन्तुष्ट नहीं है और स्वयं को मिसफिट महसूस कर रहा है। क्योंकि भारतीय जन वास्तविक शक्ति की ऊर्जा ही अभी पैदा नहीं होने पायी है।[2] इस अनुभूति के कारण जीवन की विषमता और गहरा गयी।

आर्थिक सन्दर्भ और जीवन मूल्य:

‘राजा निरबंसिया’ कहानी में वर्तमान अर्थ प्रणाली में व्यक्ति की महत्वाकांक्षाओं, विवशताओं और परिणामों का चित्रण किया है, जहां अर्थ के सामने जीवन के श्रेष्ठ मूल्य समाप्त हो जाते हैं। आधुनिक युग के टूटते जीवन मूल्यों, आस्थाओं, विश्वासों तथा विवशताओं को स्पष्ट करने लिए लेखक ने दो भिन्न युगों की कहानियों को समान्तर रूप में देखा है। इस कहानी में जो नैतिक मूल्य उभर कर सामने आते हैं, उनमें पति-पत्नी के निस्वार्थ प्रेम तथा शारीरिक पवित्रता के मूल्यों को सर्वोपरि महत्व दिया गया है।

आज का युग संघर्षमय तथा टूटते जीवन मूल्यों का युग है। विश्वासों और दैवी शक्तियों का स्थान बुद्धि ने ले लिया है। राजा-रानी और जगत्पति की दोनों समान्तर चलने वाली कहानियों से भिन्न जीवन मूल्य रेखांकित किये हैं। एक श्रेष्ठ मूल्य (पति के जीवन) की रक्षा के लिए दूसरे महत्वपूर्ण मूल्य की (शारीरिक पवित्रता) की हत्या चन्दा कर देती है, रानी वंश को बचाने के लिए अपना वेश बदलकर राजा को मिलती है तो चन्दा पति को बचाने के लिए और बाद में पति की बेकारी हटाने के लिए अपना शरीर बेचती है। राजा वापिस आने पर बालकों को देखकर स्पष्टीकरण मांगता है, तो रानी युगानुसार उत्तर देती है और जंगल में तपस्या के लिए जाती है। लेकिन जगत्पति की स्थिति बदल जाती है। वह सब कुछ जानते हुए भी चुप रहता है। क्योंकि वह बेकार है और काम के लिए उसे पूंजी चाहिए। यह पूंजी उसे चंदा के माध्यम से बचन सिंह से मिलती है। इस लाचारी में ही दो युगों का मूल्यगत अन्तर स्पष्ट हो जाता है। साथ में नैतिक मूल्यों का हास भी स्पष्ट होता है। जब चन्दा बचन सिंह के अपने घर आने को उचित नहीं ठहराती और जगत्पति से कहती है कि वह उसे डांटे। परन्तु सब कुछ विपरीत होता है। जगत्पति डांटने के स्थान पर कहता है- बचन सिंह अपनी ही तरह का आदमी है, आड़े वक्त काम आने वाला आदमी है। लेकिन इससे पफायदा उठा सकना जितना आसान है-उतना मेरा मतलब है.... जिससे कुछ लिया जाये, उसे दिया भी तो जायेगा।[3] प्रस्तुत वाक्य से यह स्पष्ट होता है

कि जगत्पति ने स्वयं उसे उस रास्ते पर भेजा। आधुनिक युग के इस जगत्पति के लिए अर्थ सर्वोपरि है अन्य नैतिक मूल्य नहीं।

‘चाय घर’ की लेडी वेड्रस और ‘वह’ का व्यवहार व्यवसायिक धरातल पर है। यद्यपि ‘वह’ उससे भावनात्मक स्तर पर जुड़ना भी चाहता है। परन्तु लेडी वेड्रस की मुस्कराहट तो हर किसी के लिए है, क्योंकि वह आर्थिक धरातल पर एक व्यवसायिक मूल्य है और यहीं से यह टेजडी शुरू है कि ‘वह’ मुस्कान को खरीद सकता है। वह सोचता है कि यदि ‘एक प्याला चाय की कीमत पर इतना शानदार धोखा खरीदा जा सकता है तो बुरा क्या है।’[4]

अर्थ और पारिवारिक सम्बन्ध:

आर्थिक संकट के कारण परिवार भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। विघटन की प्रक्रिया का आरम्भ आर्थिक संकट ही है। कमलेश्वर ने इस स्थिति को अपने कथा साहित्य में स्पष्ट किया है। आर्थिक संकट से जूझते परिवार में आज परिवार के किसी निकम्मे सदस्य के लिए कोई सम्मानजनक स्थिति नहीं बची है। ‘दुनिया बहुत बड़ी है’ की अन्नपूर्णा अपने परिवार के लिए एक निकम्मी चीज बन कर रह गयी है। पति की मृत्यु के बाद जब वह देवर के परिवार में रहने लगती है, तब उसे एक बोझ समझकर वहन किया जाता है। तीस वर्ष तक अपने ही परिवार में तन और मन दोनों को खपा देने के बावजूद वह उस परिवार का अंग नहीं बन पाती। उसके मन में मोह है, परिवार में जुड़ जाने की इच्छा है, परिवार की एक सार्थक इकाई बनने की चाह है। लेकिन धन की तुला में जहां सम्बन्धों को तोला जाता है वहां उस जैसी स्त्री का किसी परिवार में उसके अभिन्न सदस्य के रूप में, रह पाने की बात करना, आज का सबसे बड़ा झूठ होगा। तब यह सोच कर वह घर छोड़ जाती है कि दुनिया बहुत बड़ी है-कहीं भी रोटी-दाल का जुगाड़ हो जाएगा। परन्तु गांव पहुंचने पर उसे पता चलता है कि दुनिया भी उन्हीं के लिए बड़ी है, जिसके पास अर्थ की शक्ति है। वरन् एक पराश्रित स्त्री के लिए यह बड़ी दुनिया केवल उस परिवार तक सीमित हो जाती है, जो उसका आश्रयदाता है। आर्थिक संकट के कारण अन्नपूर्णा को अपने ही परिवार में अपमान और उपेक्षा भरी जिंदगी मिलती है।

‘राजा निरबंसिया’ के जगत्पति की टूटन के पीछे व्यवस्था जन्य आर्थिक कारण उपस्थित है। इस कहानी में आर्थिक स्तर पर टूटते आदमी की सच्ची तस्वीर है, न केवल दाम्पत्य के बिखराव की एकांगी कहानी। जगत्पति का यह सोचना कि, ‘चंदा ने कहा था लेकिन जब तुमने मुझे बेच दिया- क्या वह ठीक कहती थी? क्या बचन सिंह ने जो टाल के लिए रुपये दिये थे उनका ब्याज चुकता हुआ? क्या वे ही रुपये आग बन गये, जिसकी आंच में उसकी सहनशीलता, विश्वास और प्रेम और

आदर्श मोम की तरह पिघल गये। मुन्शी जी से उसका कहना-‘हर तरफ तो कर्ज से दबा हूँ, तन से, मन से, पैसे से उज्जत से किसके बल पर दुनिया संजोने की कोशिश करूँ।’[5] और अन्त में कानून को उसका यह लिखा जाना ‘किसी ने मुझको मारा नौ-किसी आदमी ने नहीं। मैं जानता हूँ कि मेरे जहर की पहचान करने के लिए मेरा सीना चीरा जायेगा। उसमें जहर है। मैंने अफीम नहीं रुपये खाये हैं, उन रुपयों में कर्ज का जहर था-उसी ने मुझे मारा।’[6] आर्थिक शोषण के आतंक को पूरी तरह उजागर करते हैं।

जगपति और चंदा के बीच तनाव का मुख्य कारण अर्थ है। जगपति टाल के लिए बच्चन सिंह से पैसे लेकर बदले में उसे चंदा को देता है। परन्तु समाज के सामने वह इस बात को स्वीकार नहीं कर पाता। पति-पत्नी दोनों अलग हो जाते हैं और जगपति अन्त में आत्महत्या कर लेता है। पति और पत्नी परिवार के दो महत्वपूर्ण इकाईयाँ हैं। परिवार की व्यवस्था और स्वरूप इनके सम्बन्धों पर निर्भर करता है। परन्तु आर्थिक संकट ने पति-पत्नी के सम्बन्धों को भी प्रभावित किया है। कमलेश्वर की ‘दुखों के रास्ते’, ‘राजा निरबंसिया’ कहानियाँ तथा ‘तीसरा आदमी’ उपन्यास में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

अर्थ और सामाजिक जीवन:

वर्तमान युग में अर्थ को जीवन का महत्वपूर्ण विधायक तत्व माना जाता है। इसमें रंचमात्रा भी सन्देह नहीं कि ‘अर्थ ही समाज की शिराओं में बहने वाला वह रक्त है जो सम्पूर्ण समाज का जीवन संचालित करता है।’[7] प्रत्येक युग का सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन अर्थ प्रक्रिया से प्रभावित रहा है। विकास का वह मूल आधार अर्थ ही है।

उच्च वर्ग:

‘आगामी अतीत’ उपन्यास पूँजीपति वर्ग द्वारा निम्न वर्ग के शोषण काजलता हुआ दस्तावेज है। उद्योगपति चन्द्रमोहन सेन डॉ. कमलबोस को धन के बल पर अपनी पुत्री के पति के रूप में खरीद लेता है। जटिल और विषम सामाजिक परिस्थितियों में आर्थिक सम्पन्नता कितनी महत्वपूर्ण हो गई है, इस कटु सत्य का उद्घाटन इस उपन्यास में लेखक ने किया है। अपनी आर्थिक विपन्नता को सम्पन्नता में बदलने के लिये ‘आगामी अतीत’ का नायक कमलबोस जो कि निम्नवर्ग का एक शिक्षित युवक है, पूँजीवादी मानसिकता से समझौता ही नहीं करता, अपितु अपने वर्ग को भी भूल जाता है। कमलबोस पूँजीवादी व्यवस्था की उन गलत महत्वाकांक्षाओं का शिकार होता है जो अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए साधन हीन आदमी का प्रयोग करने से किसी प्रकार का

परहेज नहीं करते। कमलाबोस जब साधन सम्पन्न बन जाता है तो उसे चन्दा की याद ही नहीं आती। उसने साधन सम्पन्न बनने के लिए ही चन्दा ही भावनाओं का गला घोट कर चन्द्रमोहन सेन की बेटी से विवाह किया।

यद्यपि स्वतन्त्रता के पश्चात् व्यवहारिक रूप में सामन्तवाद की समाप्ति हो चुकी थी परन्तु मानसिक स्तर पर व्यक्ति अभी भी सामन्तवादी प्रवृत्ति से ग्रस्त है। सामाजिक और आर्थिक स्तर पर यद्यपि वह कमजोर हो चुका है परन्तु अपने खोखलेपन को छुपाने का प्रयत्न करता रहता है। स्वतन्त्रता के पश्चात् जिस पूँजीपति वर्ग का उदय हुआ उसने हर स्तर पर निम्न वर्ग का शोषण किया। बिना परिश्रम से इकट्ठे किये हुए धन का यह वर्ग दुरुपयोग करता रहा। इसी धन के बल पर यह वर्ग या तो अपनी विलासिता की सामग्री जुटाता रहा या दुष्कृत्यों को छुपाता रहा तो कहीं अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए निम्न वर्ग का लाभ उठाता रहा।

मध्य वर्ग:

मध्यवर्ग मुख्यतः पूँजीवादी समाज व्यवस्था की ही उपज है।[8] इस वर्ग की नितान्त वैयक्तिक दृष्टि एवं सामाजिक प्रवाहों को गलत सन्दर्भों में देखने की बुद्धि के कारण कई विरोधी तथ्य यह वर्ग व्यक्त कर देता है। वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों के सन्दर्भों में इस वर्ग को परखने का प्रयत्न करने पर स्पष्ट होता है कि ऊँची अपेक्षाओं एवं संक्षिप्त अधूरी आर्थिक परिस्थिति से इस वर्ग की प्रमुख पीड़ा का निर्माण होता है।

निम्न मध्यवर्ग का जीवन कृत्रिम सभ्यता के खोखलेपन एवं अभावग्रस्त जीवन की पीड़ा से अक्रान्त होता है। फलतः इस वर्ग में किसी भी प्रकार की भावना की मुक्त अभिव्यक्ति दीख नहीं पड़ती। यदि कभी कहीं कोई भावना उभर आती भी है, तो वह जल्दी ही दब जाती है या उसे दबाया जाता है। अभाव से निर्मित अतृप्ति एवं निराशा इस वर्ग के जीवन के अंग बन जाते हैं। कमलेश्वर ने इस वर्ग का चित्रण इन शब्दों में प्रस्तुत किया है-घुटन, बेबसी, धुआँ, ठहराव, खामोशी और उसमें ऊबती हुई आत्मा। वे बेबस उठे हुए हाथ और पानी भरी आंखें, जैसे चारों ओर थी, हर तरफ थी।[9]

कमलेश्वर के कथा साहित्य में अधिकतर निम्न मध्यवर्ग का ही चित्रण हुआ है। इनका कथा साहित्य हमारी समाज व्यवस्था के सड़े-गले रूप को ही प्रकारान्तर से व्यक्त करता है। इस समाज की व्यवस्था में ही कहीं ऐसा कुछ खोटा है कि जिससे इस वर्ग का जीवन, बहाव के साथ बहक जाने को

विवश है। इस यथार्थ स्थिति के पीछे काम करने वाली सामाजिक स्थिति साधारण व्यक्ति के सामने भ्रम, आशंका एवं आस्थाहीनता को प्रस्तुत करती है तथा व्यक्ति को आत्मकेन्द्रित बनाती है। संक्रमणकालीन स्थितियों में जहां एक ओर परिवार का विघटन हो रहा था, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध बदल रहे थे वहीं दूसरी ओर स्वतन्त्रता भारत का निम्न मध्यवर्ग आदमी राजनीतिक आर्थिक विसंगतियों के बीच पिसा जा रहा था। एक ओर ये परिस्थितियां उसे तोड़ती जा रही थी, विवश बना रही थी, तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता और अपने अस्तित्व के प्रति वह चिन्तित था। उसकी सुरक्षा के लिए छटपटा रहा था तथा राष्ट्रीय सामाजिक एवं आर्थिक स्तर पर अपनी सार्थकता अपना उचित स्थान खोज रहा था। वह एके ऐसे बिन्दु की तलाश कर रहा था जो उसे एक सार्थक इकाई के रूप में प्रतिष्ठित कर सके।

कमलेश्वर के लगभग सभी उपन्यासों में निम्न मध्यवर्ग का बिखराव और टूटन आर्थिक समस्या की विषमताओं से सम्बद्ध है। परन्तु 'डाक बंगला' उपन्यास में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है। इस उपन्यास में सुरक्षा की कामना का आर्थिक पक्ष उद्घाटित हुआ है। निम्न मध्यवर्ग की आर्थिक स्थिति और उसके कारण जीवन मूल्यों के बदलने का प्रभावी चित्रण लेखक ने इस उपन्यास में किया है। ईरा के माध्यम से इस बात को स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार मध्यवर्गीय व्यक्ति अर्थाभाव के कारण अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं कर पाता। यदि वह उन्हें पूरा करना भी चाहता है तो किस तरह का जीवन जीने पर वह विवश होता है। उसके जीवन में टूटन और बिखराव के अतिरिक्त कुछ नहीं रहता।

निम्न मध्यवर्ग में पति-पत्नी के सम्बन्ध तनाव, संशय टूटन, ऐंठन, अभिमान आदि अमानवीय स्तर पर बनते हैं। संशय की अवस्था, प्रेम का अभाव, झूठे आदर्श आदि कई कारणों से पति-पत्नी में निभ नहीं पाती या फिर निर्वाह विवशतापूर्वक करते हैं। पति-पत्नी में प्रेम की कृत्रिमता एवं दूरी की भावना बनी रहती है। 'आत्मा की आवाज' कहानी में स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, समाज की कलुषित दृष्टि एवं आपसी संशय का चित्रण है। गोपाल समाज के सामने सामने पढ़ा-लिखा और समझदार पति है। परन्तु घर में वह अपनी पत्नी के साथ अमावीय व्यवहार करता है। इसकी संकीर्ण वृत्ति पत्नी का राजू से बात करना सहन नहीं कर पाती। राजू के सामने तो वह उसे कुछ नहीं कहता। परन्तु दूसरे कमरे में जाकर जली हुई रोटी का बहाना बना कर उसके डांटता है। यहां तक कि उसे मारता भी है।

कहा जा सकता है कि स्वतन्त्रता के पश्चात् यही वर्ग सबसे अधिक पिसा रहा है। इसका जीवन कृत्रिमता और खोखलेपन से भरा है। आर्थिक संकट ने इस वर्ग को खोखला और कृत्रिम जीवन जीने पर विवश कर दिया। न तो यह स्वयं को समाज के उच्च वर्ग

में प्रतिष्ठित कर पाया न निम्न वर्ग के साथ ही स्वयं को स्वीकार कर सका। अहं, कुण्ठा, तनाव, संशय, अभिमान, झूठा आदर्श आदि इसके जीवन का अंग बन गये। इस वर्ग में पति-पत्नी के सम्बन्धों में प्रेम की कृत्रिमता और दूरी की भावना ने घर कर लिया। फलस्वरूप पति-पत्नी के सम्बन्ध भी मधुर नहीं रहे। आर्थिक संकट से जूझता हुआ यह वर्ग सदैव अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए संघर्ष ही करता रहा।

निम्न वर्ग:

स्वतन्त्रता से पूर्व जिस आर्थिक समता का सपना भारतवासियों ने देखा था वह पूरा नहीं हो सका। आर्थिक विषमता कम नहीं हुई अपितु दिन पर दिन बढ़ती ही गई। धनी और धनवान हो गये, निर्धन अपनी निर्धनता की चरम सीमा पर पहुंच गये। लूटे-खसोटे का बाजार और भी गरम होने से आर्थिक वैषम्य पहले से घटा नहीं बढ़ा ही। वह अपने विवध विकृत रूपों में मानवता का शोषण करने लगा। देश विभाजन ने इस आर्थिक वैषम्य की जो गहरी रेखा खींची वह आज तक नहीं मिट पाई। यदि यह कहा जाये कि इसकी नींव वहीं से रखी गई, तो यह असंगत न होगा। कमलेश्वर के उपन्यास 'लौटे हुए मुसाफिर' में इसे स्पष्ट देखा जा सकता है। विभाजन का सबसे अधिक प्रभाव निम्नवर्ग के लोगों पर पड़ा। विभाजन का लाभ धनी वर्ग को हुआ वहीं पाकिस्तान पहुंच पाया। दीन दलित दरिद्र लोगों की इस विभाजन के पश्चात् आर्थिक संकट के कारण क्या स्थिति हुई? वास्तव में इस विभाजन का कारण भी तो अर्थ ही था। 'असली लड़ाई तो गरीबी और अमीरी' की थी। सबके मन में आशा का संचार था कि 'नया राष्ट्र बनने से एक नयी जिंदगी की हदें खुल जायेंगी। पर रह-रह कर भ्रम होता था कि यह सब कुछ होगा नहीं। कैसे होगा? करोड़ों मुसलमानों के बीच उसकी क्या बिसात है।[10] इफितकार के माध्यम से लेखक ने इस वर्ग की स्थिति को स्पष्ट किया है जिनके लिए आर्थिक समस्या जैसी राष्ट्र के बनने से पहले थी वैसी ही बाद में भी रही। इफितकार कहता है- 'और लगता मुझे यही है कि यदि पाकिस्तान बना भी तो अपने किसी काम नहीं आयेगा। पाकिस्तान में भी तो हमें इक्का ही हांकना पड़ेगा।'[11] लोगों को तो यह विश्वास था कि वहां पर हर चीज पर्याप्त मात्रा में मिलेगी। गरीबी नाम की चीज ही नहीं होगी। पाकिस्तान को बना ही इसीलिए कि हर मुसलमान वहां आराम और चैन से रह सके। एक तरफ तो इस तरह की बातें कर लोग नये-नये सपने बुन रहे थे तो दूसरी तरफ इफितकार जैसे लोग यह मानते हैं कि वहां भी तो उस जैसे लोगों को ही इक्का हांकना पड़ेगा। अमीर मुसलमान तो अपनी-अपनी व्यवस्था कर ले रहे थे, परन्तु फगरीब मुसलमानों की निगाहें अमीर मुसलमानों पर लगी थीं जो वे करेंगे वही ठीक होगा।'[12] यासीन जैसे अमीर लोगों ने इन गरीबों को झूठे

आश्वासन दिये कि वे उन्हें जहाज से पाकिस्तान ले जायेंगे। ये गरीब अपनी सारी पूंजी बेच कर घर से तो निकल पड़े, पर दिल्ली तक भी नहीं पहुंच पाये। सब बिखर गये। फसुबराती मोची आगरा में राजामंडी के चौराहे पर बैठता है-चमन चूंगी में चपरासी लग गया और रमजानी का बुरा हाल था, वह बेचारा भूखों मर रहा था।[13] आर्थिक संकट ने इन लोगों को इतना बेचारा बना दिया कि इन्हें रोजी-रोटी की समस्या आ खड़ी हुई। जो पूंजी थी वह तो जाने में नष्ट हो गई, विभाजन से निम्न वर्ग की स्थिति ही अधिक दयनीय एवं करुण हुई।

‘एक सड़क सतावन गलियां’ में लेखक ने निम्न वर्ग के जीवन में होने वाले भयावह शोषण का चित्रण किया है। अर्थाभाव के कारण वह नारकीय जीवन जीने के लिए विवश होता है तथा शोषण के इस तथ्य को नायक सरनाम के शब्दों में देखा जा सकता है, ‘जितना काम किया जाता है उतना पैसा नहीं मिलता। नौकरी की मुस्तकली का कोई ठिकाना नहीं। जब जिसे जी चाहता मालिक निकाल बाहर करता-सच पूछिए तो मजदूर और मालिक का झगड़ा हर जगह हर स्थिति में है। मुश्किल यह है कि मजदूर संगठित नहीं होते, इसलिए उनका शोषण होता है।’[14]

निर्धनों पर किये जाने वाले अत्याचार सर्वव्यापी हैं। मालिक के नौकर पर, अपफसर के कर्मचारी पर, पुरुष के नारी पर, सबल के निर्बल पर होने वाले अत्याचार तो हैं ही, शासन भी उच्चवर्ग का ही हिमायती रहता है और गरीब को पीसता रहता है। पूंजीपति और पूंजीपतियों के समर्थक सरकारी अधिकारी निम्नवर्ग को नारकीय जीवनयापन करने के लिए विवश करते हैं। कमलेश्वर की ‘जार्ज पंचम की नाक’ कहानी इस तथ्य को स्पष्ट करती है। जार्ज पंचम के बुत की नाक लगाने के लिए किसी बड़े नेताया व्यापारी की नाक पिफट नहीं बैठती। तो एक निर्धन नागरिक की नाक काट कर वहां लगा दी जाती है। क्योंकि ‘मूर्तिकार’ पैसे से लाचार था।[14] और पैसे की विवशता निर्धन व्यक्ति से सब कुछ करवा देती है।

अतः कहा जा सकता है कि आज निम्नवर्ग का व्यक्ति ही सबसे अधिक आर्थिक संकट को झेल रहा है। पेट की भूख, रोजी-रोटी की समस्या और भविष्य की चिन्ता इस वर्ग पर हर समय छाई रहती है। आर्थिक संकट ने इस वर्ग के व्यक्ति को इतना विवश और निरीह बना दिया है कि सारे मानवीय मूल्य इसके लिए निरर्थक हो चुके हैं। मात्र पेट की भूख और जीने की इच्छा ही इस वर्ग के लिए एक मूल्य रह गया है।

निष्कर्ष:

कमलेश्वर के कथा साहित्य में आर्थिक चेतना का अध्ययन कर हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि स्वतन्त्रता के पश्चात् भी देश में आर्थिक विकास का लाभ सभी वर्ग के लोगों को नहीं पहुंचा। स्वतन्त्रता के पश्चात् मिश्रित अर्थ प्रणाली और राष्ट्रीय स्तर पर हुए नियोजन से समाज के आर्थिक जीवन में जबरदस्त परिवर्तन आया। इस परिवर्तन में आर्थिक तत्वों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। जीवन में परिवर्तन के आर्थिक तत्व ने पारम्परिक जीवन मूल्यों को भी चुनौती दी। अतः पारिवारिक, सामाजिक सम्बन्धों में द्वन्द्व उभरा और सम्बन्धों की स्थापित नैतिकता का विघटन आरम्भ हुआ। अर्थ के संदर्भ में ही समाज में ही उच्चवर्ग, मध्यवर्ग और निम्नवर्ग का जन्म हुआ। स्वतन्त्रता के पश्चात् पूंजीपति या उच्चवर्ग का जन्म हुआ वह अपने से निम्नवर्ग का शोषण करता रहा। बिना परिश्रम से प्राप्त किये धन का यह वर्ग दुरुपयोग करता रहा। स्वतन्त्रता से पहले जो सामन्तवाद था वह व्यवहारिक स्तर पर स्वतन्त्रता के पश्चात् समाप्त तो हो गया परन्तु मानसिक स्तर पर यह वर्ग उससे मुक्ति नहीं पा सका।

स्वतन्त्रता के पश्चात् जो वर्ग सबसे अधिक पिसा वह था मध्यवर्ग। इस वर्ग के पास मानसिकता तो उच्चवर्ग की थी परन्तु आय निम्न वर्ग की। यह वर्ग न स्वयं को उच्चवर्ग में प्रतिष्ठित कर पाया न निम्नवर्ग को ही स्वीकार कर पाया। झूठा आदर्श, अहं, खोखलेपन, कृत्रिमता, संशय आदि इसके जीवन के अंग बन गये। आधुनिक अर्थ प्रधान युग में सबसे अधिकतम आर्थिक संकट को झेलने वाला निम्नवर्ग है। स्वतन्त्रता के पश्चात् यह वर्ग पेट की भूख, रोजी-रोटी की समस्या तथा भविष्य की चिन्ता से सदैव ग्रस्त रहा। आर्थिक संकट ने इस वर्ग को इतना विवश और निरीह बना दिया है कि सारे मानवीय मूल्य इसके लिए निरर्थक हो गये हैं। मात्र पेट की भूख और जीने की इच्छा ही इसके लिए एक सर्वश्रेष्ठ मूल्य है।

संदर्भ सूची:

1. कमलेश्वर, नयी कहानी की भूमिका, पृ. 120
2. वही, पृ. 133
3. कमलेश्वर, मेरी प्रिय कहानियां, पृ. 25
4. कमलेश्वर, राजा निरबंसिया कहानी संग्रह, पृ. 166

5. कमलेश्वर, राजा निरबंसिया कहानी संग्रह, पृ. 107
6. वही, पृ. 109
7. हेमेन्द्र पानेरी, स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य संक्रमण, पृ. 204
8. सुधाकर गोकाकर, मार्क्सवाद और हिन्दी कहानी, पृ. 88
9. कमलेश्वर, राजा निरबंसिया कहानी संग्रह, पृ. 78
10. कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर,, पृ. 29
11. वही, पृ. 30
12. कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर, पृ. 32
13. वही, पृ. 104
14. कमलेश्वर, बयान तथा अन्य कहानियां, पृ. 14

Corresponding Author

Jaswinder Singh*

Research Scholar, PhD (Hindi), OPJS University,
Churu, Rajasthan